योग क्रियाओं में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक निर्णय का अध्ययन

डॉ. रंजीता बैद*

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य योग क्रिया में भाग लेने एवं न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक निर्णय का अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के तीन संभागों के 12 बी.एड. महाविद्यालयों के 600 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयनित कर दत्त संकलन पर कार्य किया गया है जिसमें निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि योग क्रिया में भाग लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का नैतिक निर्णय का स्तर योग क्रिया में भाग न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर का है।

प्रस्तावना

बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में योग शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योग देती है। योग शिक्षा तथा उससे सम्बन्धित विभिन्न क्रियायें सभी प्रकार से बालक के सर्वतोन्मुखी विकास में बहुत ही मूल्यवान सिद्ध होती है। योग पद्धति, चिन्तन तथा अभ्यास का नैतिकता से अटूट सम्बन्ध है। इसके द्वारा बालकों का नैतिक विकास भी अच्छी तरह से किया जा सकता है। योग साधना शरीर की बाहरी शुद्धि के साथ – साथ आन्तरिक शुद्धि तथा मन और प्राणों की शुद्धता और पवित्रता पर पूरा ध्यान देती है। वर्तमान में किशोरों व युवाओं में सम्यक नैतिक निर्णय की समस्या अपने आप में विकराल है। विशेश रूप से किशोर पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से उचित – अनुचित का निर्णय करने में दिग्भ्रमित स्थिति में है, जबकि यह सुविदित है कि वास्तव में नैतिकता ही धर्म का व्यवहारिक स्वरूप है, यदि व्यक्ति में सही–गलत की पहचान, आचार–विचार का ख्याल, करणीय तथा अकरणीय कर्म एवं स्वीकृत आदर्शों पर उचित निर्णय लेने की क्षमता का ज्ञान हो, एवं तदनुसार वह धर्म सम्मत आचरण करे या ठीक प्रकार से उचित निर्णय करे, तो स्वाभाविक रूप से उसमें नैतिक निर्णय करने की क्षमता का विकास हो जाता है। इस आचरण और व्यवहार की शुद्धि में योग क्रियायें सहायक सिद्ध होती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आन्तरिक निर्णय का अध्ययन करना।
2. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक यथार्थता का अध्ययन करना।
3. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के प्रतिशोध बनाम प्रायश्चित का अध्ययन करना।
4. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में गम्भीर दण्ड की प्रभावशीलता अध्ययन करना।
5. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सम्प्रेशणात्मक उत्तरदायित्व का अध्ययन करना।
6. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेन वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक निर्णय के सम्पूर्ण आयामों का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के आन्तरिक निर्णय में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक यथार्थता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के प्रतिशोध बनाम प्रायश्चित में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में गम्भीर दण्ड की प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

*सहायक प्रोफेसर, बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई), गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर, चूरू (राजस्थान)

5. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के सम्प्रेशणात्मक उत्तरदायित्व में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. योग क्रिया में भाग लेने तथा न लेन वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक निर्णय के सम्पूर्ण आयामों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा दत्त संकलन हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में राजस्थान राज्य के तीन संभागों अजमेर, बीकानेर तथा जयपुर के 12 बी.एड. महाविद्यालयों को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया है। न्यादर्श में सम्मिलित कुल 600 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से दत्त संकलन का कार्य किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में दत्त संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया गया–
नैतिक निर्णय परीक्षण – कुमारी रंजना गुप्ता

प्रयुक्त साँख्यिकीय विधियाँ

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. क्रान्तिक अनुपात मान

विश्लेषण एवं व्याख्या

योग क्रिया में भाग लेने एवं न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक निर्णय के विभिन्न आयामों के मध्यमानों के बीच अन्तरों की सार्थकता की तुलना सारणी –

नैतिक निर्णय के आयाम	बी.एड. प्रशिक्षणार्थी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	सार्थकता स्तर	
						0.05 स्तर	0.01 स्तर
आन्तरिक निर्णय	योग क्रिया में भाग लेने वाले	300	21.42	6.23	3.97		सार्थक अन्तर है।
	योग क्रिया में भाग न लेने वाले	300	19.44	6.00			
नैतिक यथार्थता	योग क्रिया में भाग लेने वाले	300	**15.82**	5.94	4.45		सार्थक अन्तर है।
	योग क्रिया में भाग न लेने वाले	300	13.74	5.53			
प्रतिशोध बनाम प्रार्यश्चित	योग क्रिया में भाग लेने वाले	300	11.93	4.48	4.97		सार्थक अन्तर है।
	योग क्रिया में भाग न लेने वाले	300	10.13	4.38			
गम्भीर दण्ड की प्रभावशीलता	योग क्रिया में भाग लेने वाले	300	17.11	6.25	5.31		सार्थक अन्तर है।
	योग क्रिया में भाग न लेने वाले	300	14.47	5.91			
सम्प्रेषणात्मक उत्तरदायित्व	योग क्रिया में भाग लेने वाले	300	12.42	4.86	5.57		सार्थक अन्तर है।
	योग क्रिया में भाग न लेने वाले	300	10.14	4.53			
सम्पूर्ण आयाम	योग क्रिया में भाग लेने वाले	300	78.70	24.06	5.65		सार्थक अन्तर है।
	योग क्रिया में भाग न लेने वाले	300	67.92	22.64			

निष्कर्ष

1. योग क्रियाओं में भाग न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा भाग लेने वालों में अन्तर्भूत नैतिक निर्णय का स्तर उच्च है।
2. योग क्रियाओं में भाग लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक यथार्थता का स्तर उच्च है।
3. योग क्रियाओं में भाग न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा भाग लेने वालों में प्रतिशोध बनाम प्रायश्चित सम्बन्धी नैतिक निर्णय की मात्रा अधिक है।
4. योग क्रियाओं में भाग न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा भाग लेने वालों में सम्प्रेशणात्मक उत्तरदायित्व सम्बन्धी नैतिक पक्ष उच्च स्तर का है।
5. योग क्रियाओं में भाग न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा भाग लेने वालों में गम्भीर दण्ड प्रभावशीलता सम्बन्धी नैतिक निर्णय का स्तर उच्च है।
6. योग क्रियाओं में भाग लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का सम्पूर्ण नैतिक निर्णय, भाग न लेने वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से उच्च स्तर का है।

सन्दर्भ साहित्य

चौहान,प्रो. आर. एस. (2001). बाल विकास के मनोवैज्ञानिक आधार. साहित्य प्रकाशन. आगराः 44–48.

माथुर, डॉ.एस.एस. (2005).स्वास्थ्य मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मन्दिर. आगराः 140 – 153.

शर्मा, डॉ. कुसुम (2005). विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा. राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा : 321 – 329.

शर्मा, डॉ. गंगाराम एवं भार्गव, डॉ. विवेक (2006). शिक्षा मनोविज्ञान, एच.पी. भार्गव बुक हाउस.आगराः 399 – 412.

ओझा, डॉ. आर.के. (1981). मनोविज्ञान के सिद्धान्त एवं सम्प्रदाय. विनोद पुस्तक मन्दिर.आगराः 406 – 407.